

शवाजी महाराज और सूरत पर आक्रमण

प्रलम्बिस के लयिः

[छत्रपतशवाजी महाराज](#), [राजकोट कलि](#), [सधुदुरग कलि](#), [कुरते दवीप](#), [अरब सागर](#), [सददीस](#), [तापती नदी](#), [सूरत का युद्ध, 1664](#), [फरेंकोइस बरनयिर](#), [जीन बैप्टसिट टैवरनयिर](#), [कोंडाना कलि](#), [अष्टप्रधान](#), [चौथ](#), [सरदेशमुखी](#) ।

मेन्स के लयिः

मराठा साम्राज्य की वरिसत और उन्हें संरक्षण करने की आवश्यकता ।

स्रोतः इंडयिन एक्सप्रेस

चर्चा में क्यों?

हाल ही में सधुदुरग ज़लि के मालवण में राजकोट कलि में अनावरण की गई [छत्रपतशवाजी महाराज](#) की 35 फुट ऊँची प्रतमा एक वर्ष से भी कम समय में ढह गई ।

- इसके वपिरीत, शवाजी महाराज का [सधुदुरग कलि](#), जो 357 साल पहले बना था, आज भी मज़बूत है और सूरत हमलों जैसे सैन्य अभयानों का एक महत्त्वपूर्ण हसिसा रहा है । सूरत पर आक्रमण से लूटे गए धन में से अधिकांश का प्रयोग सधुदुरग कलि के नरिमाण में कयिा गया था ।

सधुदुरग कलि के बारे में मुख्य बढि क्या हैं?

- नरिमाण:** कलि का नरिमाण 25 नवंबर, 1664 को शुरू तथा 29 मार्च, 1667 को पूरण हुआ ।
 - यह कलि [अरब सागर](#) में कुरते दवीप पर शवाजी महाराज और एक वशिषज्ज (हरिजी इंदुलकर) द्वारा गहन परीक्षण के बाद बनाया गया था ।
- नरिमाण लागत:** कलि के नरिमाण में एक करोड होन्स (hons) की लागत का अनुमान है । होन्स एक सोने का सकिका था जसिका इस्तेमाल 17 वीं शताब्दी में शवाजी महाराज के शासनकाल के दौरान मुद्रा के रूप में कयिा जाता था ।
- समुद्री प्रभुत्व:** शवाजी महाराज का दृष्टिकोण एक शक्तशाली नौसेना के माध्यम से समुद्री नयित्रण स्थापति करना और आर्थिक स्थरिता को बढाना था ।
 - इस कलि की स्थति समुद्री पहुँच पर प्रभुत्व रखने तथा सददी, पुरतगाली और अन्य औपनविशकि वदिशी शक्तयिों से संरक्षण हेतु रणनीतिक रूप से महत्त्वपूर्ण थी ।
- वास्तुकला उत्कृष्टता:** कलि का नरिमाण 45 सीढयिों और चार कलिमीटर लंबी सर्पलाकार दीवार के साथ कयिा गया था । यह दस मीटर ऊँचा था । यहाँ बंदूकें तथा गार्ड क्वार्टर जैसी सुवधिएँ भी शामिल थी ।
 - इसके प्रवेश द्वार पर हनुमान की दक्षणिमुखी प्रतमा थी तथा अतरिकित सुरक्षा हेतु पद्मगढ, सरजेकोट और राजकोट जैसे छोटे कलि भी थे ।
- वर्तमान स्थति:** सधुदुरग कलि शवाजी महाराज की सैन्य और सामरिक शक्ति का एक अभेद्य प्रतीक बना हुआ है । यह [मराठा नौसेनकि शक्ति](#) एवं कलिबंदी तकनीकों का एक ऐतहासकि प्रमाण है ।

शवाजी द्वारा कयि गए सूरत पर आक्रमणः

- सूरत का सामरिक महत्त्व:** सूरत को 'पूर्व का सबसे बडा व्यापारिक केंद्र और मुगल साम्राज्य का सबसे समृद्ध रत्न' के रूप में जाना जाता था ।
 - सूरत रणनीतिक रूप से [तापती नदी](#) के दक्षणि तट पर अवस्थति था ।
 - यह यूरोपीय, ईरानी और अरबों के साथ-साथ मुगल व्यापार का प्रमुख केंद्र था और साथ हीमक्का जाने वाले तीर्थयात्रयिों के लयि एक पारगमन मार्ग भी था (मक्का का प्रवेश द्वार) ।

- सूरत को नशिना बनाना मुगल अर्थव्यवस्था को बाधित करने और मराठा प्रभुत्व स्थापित करने की एक रणनीतिक चाल थी।
- **सूरत पर पहला आक्रमण (जनवरी 1664):** शिवाजी महाराज ने जनवरी 1664 में सूरत पर आक्रमण कर मुगल सेना को चौंका दिया।
 - सूरत के गवर्नर इनायत खान ने भी शरण ग्रहण कर ली, जिससे शहर रक्षाहीन हो गया।
 - सूरत का युद्ध (सूरत की लूट) में नकदी, सोना, चाँदी, मोती और बढ़िया कपड़ों सहित अनुमानित एक करोड़ रुपए की संपत्ति प्राप्त हुई।
 - लूटी गई धनराशि से सधुदुर्ग कलि का निर्माण किया गया तथा मराठा नौसेना का वसितार किया गया।
- **प्रभाव:** सूरत में शिवाजी महाराज की गतिविधियों ने अंगरेजों को चिंतित कर दिया और उन्होंने अपना गोदाम सूरत से बॉम्बे स्थानांतरित कर दिया। मई 1664 तक पुर्तगालियों ने बॉम्बे को अंगरेजों को उपहार में दे दिया था तथा शिवाजी महाराज के महान कार्य व्यापक रूप से प्रसिद्ध हुए थे।
 - **सूरत पर दूसरा आक्रमण (अक्टूबर 1670):** वर्ष 1670 में शिवाजी महाराज ने सूरत पर दूसरा आक्रमण किया, जिसमें लगभग 6.6 मिलियन रुपए की संपत्ति लूटी गई।
 - डच और अंगरेज व्यापारियों को नुकसान नहीं पहुंचाया गया क्योंकि शिवाजी महाराज का प्राथमिक लक्ष्य मुगल ही थे।
 - लूट में लगभग पाँच मिलियन रुपए मूल्य के रत्न, सोना और सड़के शामिल थे।
- **सूरत आक्रमण का रणनीतिक महत्त्व:** आक्रमण/छापों का उद्देश्य मुगल आर्थिक स्थिरता को बाधित करना और मराठा शक्ति का प्रदर्शन करना था। शिवाजी महाराज की सावधानीपूर्वक योजना और रणनीतिक क्रियान्वयन, नागरिकों को पहुँचाने में उनके संयम, सभी का उद्देश्य मुगल नयितरण के प्रभाव को कम करना था।

शिवाजी महाराज के संदर्भ में मुख्य बटु क्या हैं?

- **जन्म:** उनका जन्म 19 फरवरी, 1630 को वर्तमान महाराष्ट्र राज्य के पुणे जिले के शिवनेरी किले में हुआ था।
- **प्रारंभिक जीवन:** कशिरोवसथा में ही उन्होंने बीजापुर के अधीन तोरणा किले पर सफलतापूर्वक नयितरण प्राप्त कर लिया था। उन्होंने बीजापुर के आदिल शाह से कौडाना कलि भी हासिल कर लिया था।
- **मृत्यु:** छत्रपति शिवाजी की मृत्यु 3 अप्रैल, 1680 को रायगढ़ में तीन सप्ताह तक बुखार रहने के बाद हुई।

महत्त्वपूर्ण लड़ाइयाँ:

युद्ध	पार्टियाँ
पुर्तापगढ़ का युद्ध, वर्ष 1659	छत्रपति शिवाजी महाराज के नेतृत्व वाली मराठा सेना और आदिलशाही सेनापति अफजल खान के बीच।
सूरत की लड़ाई, वर्ष 1664	छत्रपति शिवाजी महाराज और मुगल गवर्नर इनायत खान के बीच।
पुरंदर का युद्ध, वर्ष 1665	छत्रपति शिवाजी महाराज और मुगल सेनापति जय सहि के बीच।
संगमनेर की लड़ाई, वर्ष 1679	मुगल साम्राज्य और मराठा साम्राज्य के बीच यह आखिरी लड़ाई थी जिसमें मराठा राजा शिवाजी ने लड़ाई लड़ी थी।

- **शीर्षक: 6 जून, 1674** को रायगढ़ में उन्हें मराठों के राजा के रूप में ताज पहनाया गया।
 - उसने छत्रपति, शककर्त्ता, क्षत्रिय कुलवंत तथा हैण्डव धर्मोधारक की उपाधियाँ धारण की।
- **प्रशासन:**
 - **केंद्रीय प्रशासन:** राजा राज्य का सर्वोच्च प्रमुख होता था, जिसकी सहायता के लिये आठ मंत्रियों का एक समूह होता था, जिन्हें 'अष्टप्रधान' कहा जाता था।
 - **राजस्व प्रशासन:** चौथ और सरदेशमुखी आय के महत्त्वपूर्ण स्रोत थे।
 - चौथ: यह राजस्व मांग का 1/4 हिस्सा था जो शिवाजी की सेनाओं द्वारा गैर-मराठा क्षेत्रों पर आक्रमण के वरिद्ध सुरक्षा के रूप में मराठों को दिया जाता था।
 - सरदेशमुखी: यह उन भूमियों पर 10% का अतिरिक्त कर था जिन पर मराठों ने वंशानुगत अधिकार का दावा किया था।

शिवाजी के बाद मराठों की यात्रा क्या थी?

- **शिवाजी महाराज की मृत्यु के बाद अशांति:** शिवाजी की मृत्यु के बाद, उनके पुत्र संभाजी सहिसन पर बैठे, लेकिन वर्ष 1689 में मुगलों द्वारा पकड़े जाने और मार दिए जाने के कारण उनका शासनकाल अल्पकालिक रहा।
 - संभाजी की मृत्यु के बाद, साम्राज्य का नेतृत्व शिवाजी के छोटे भाई छत्रपति राजाराम महाराज ने किया।
- **पेशवा के अधीन मराठाओं का उत्थान:** वर्ष 1713 में बालाजी विश्वनाथ की पेशवा के रूप में नियुक्ति एक महत्त्वपूर्ण मोड़ सिद्ध हुई। उनकी कूटनीति और सुधारों ने मराठा वसितार एवं एकीकरण की नींव रखी।
 - बाजी राव प्रथम (वर्ष 1720-1740) ने मराठा नयितरण को उत्तरी भारत में वसितारित किया और उनकी रणनीतिक दूरदर्शिता तथा सैन्य कौशल ने मराठा प्रभुत्व को सुदृढ़ किया।
- **मराठा संघ: 18 वीं शताब्दी के प्रारंभ तक** आंतरिक कलह और बाह्य दबावों के कारण मराठा साम्राज्य की केंद्रीय शक्ति कमजोर हो गई थी।
 - यह संघ एक केंद्रीकृत राज्य नहीं था, बल्कि विभिन्न मराठा राज्यों और नेताओं का गठबंधन था, जिसमें पुणे के पेशवा, इंदौर के होल्कर, बड़ौदा के गायकवाड एवं ग्वालियर के सधिया शामिल थे।
- **मराठाओं का अंगरेजों से संघर्ष:**
 - प्रथम आंग्ल-मराठा युद्ध (वर्ष 1775-1782): यह युद्ध वर्ष 1782 में सालबाई की संधि के साथ समाप्त हुआ, जिसके

परणिामसवरूप साल्सेट द्वीप अंगरेजों को सौंप दिया गया और सूरत तथा भडौच के मराठा बंदरगाहों को ब्रिटिश व्यापार के लिये खोल दिया गया ।

- **द्वितीय आंग्ल-मराठा युद्ध (वर्ष 1803-1805):** आर्थर वेलेस्ली के नेतृत्व में ब्रिटिश सेना ने सधिया और भोंसले की संयुक्त सेनाओं को पराजित किया तथा उन्हें सहायक गठबंधन स्वीकार करने के लिये मजबूर किया गया ।
- **तृतीय आंग्ल-मराठा युद्ध (वर्ष 1817-1818):** यह मराठों की अंतिम हार थी , इस युद्ध के परणिामसवरूप मराठा साम्राज्य का वधितन हो गया ।

नषिकरष:

परतमिा को लेकर चल रही बहस ऐतहिसकि वयकृत्व के सम्मान और संरकषण की आवशयकता पर ज़ोर देती है, जससे यह सुनश्चिति हो सके कआधुनकि श्रद्धांजलि ऐतहिसकि उपलब्धियों की सच्ची वरिसत को परतबिबिति करती है । समकालीन परशासन और परयोजना परबंधन की तीव्र सार्वजनकि आलोचना से ऐतहिसकि शख्सयितों के बेहतर संरकषण एवं सांसकृतकि धरोहर स्थलों के रूप में उनके मूल्य को सुदृढ़ करने में मदद मलिंगी ।

अधकि पढ़ें: [मराठा सैन्य परदिश्य](#)

???????? ???? ???? ???? ????:

परश्न. शवािजी की रणनीतयों और नेतृत्व ने मुगल वसितार के खलिाफ मराठा परतरौध को कसि परकार आकार दिया?

UPSC सविलि सेवा परीकषा, पछिले वर्ष के परश्न (PYQ)

????????

परश्न. अहमद शाह अब्दाली द्वारा भारत पर आक्रमण करने और पानीपत की तीसरी लडाई लडने का तात्कालकि कारण क्या था? (2010)

- वह लाहौर से अपने वायसराय तैमूर शाह को मराठों द्वारा नकिले जाने का बदला लेना चाहता था ।
- जालंधर के नरिश गवरनर अदीना बेग खान ने उन्हें पंजाब पर आक्रमण करने के लयि आमंत्रति कयि ।
- वह चहार महल (गुजरात, औरंगाबाद, सयिलकोट और पसरूर) के राजस्व का भुगतान न करने के लयि मुगल परशासन को दंडति करना चाहता था ।
- वह दलिली की सीमाओं तक पंजाब के सभी उपजाऊ मैदानों को अपने राज्य में मलाना चाहता था ।

उत्तर: (a)

????

परश्न. सुस्पष्ट कीजयि किमिध्य-अठारहवीं शताब्दी का भारत वखिंडति राज्यतंत्र की छाया से कसि परकार ग्रसति था? (2017)